بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक**28.07.2017** मस्जिद बैतुल फ़तूह,मॉर्डन लंदन

जलसे पर आने का उद्देश्य तो तक़्वा में तरक़्क़ी करना, ख़ुदा तआला से अपने सम्बंध में बढ़ना तथा एक दूसरे के हक़ अदा करना और एक दूसरे के लिए अपनी क़ुर्बानी की भावना तथा अपने स्तर को बढ़ाना है

निष्ठा पूर्वक जलसे के प्रोग्राम में शामिल हों, तक़रीरों को सुनें तथा इस नीयत से सुनें कि हमने इनके अनुसार काम करने का यथासम्भव प्रयास करना है।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से आज यू.के. का जलसा सालाना शुरु हो रहा है। दुआओं पर इन दिनों में अधिक ज़ोर दें और जिनको तौफ़ीक़ है सदक़ा भी दें कि अल्लाह तआला इस जलसे को हर दृष्टि से सफल और बरकत वाला बनाए और सब लोग यहाँ आकर शामिल होने वाले भी तथा विश्व के विभिन्न देशों में रहने वाले अहमदी भी जो एम टी ए के माध्यम से जलसे की कार्यवाही सुन रहे हैं जलसे की प्रत्येक दृष्टि से सफलता तथा दुश्मन के प्रत्येक वार से बचने के लिए दुआ करें। पिछले ख़ुत्बः में मैंने मेहमान नवाज़ी करने वाले कार्यकर्ताओं को जलसे के अतिथियों का आतिथ्य करने की ओर ध्यान दिलाया था। आज संक्षेप में अतिथियों को इस ओर ध्यान दिलाना चाहता हूँ कि मेहमान के भी कुछ कर्त्तव्य और दायित्व हैं जिसे उसने अदा करना है। मेहमान का निःसन्देह इस्लाम में बड़ा महत्त्व है परन्तु इस्लाम एक ऐसा संतुलित और संतुलन की शिक्षा देने वाला धर्म है जो केवल एक पक्ष को ही कर्त्तव्य का आभास कराकर नसीहत नहीं करता अपितु दूसरे पक्ष को भी कहता है कि तुम भी अपने दायित्वों का निर्वाह करो तथा जिन दायित्वों का तुम पर भार है तुम उन्हें अदा करो क्यूँकि यही बात है जो एक प्यार मुहब्बत तथा बन्धुत्व पर आधारित समाज की स्थापना का कारण बनेगी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जब एक साल अपनी अप्रसन्नता प्रकट करते हुए जलसे का आयोजन नहीं फ़रमाया था तो उस समय इसका कारण भी जलसे में शामिल होने वालों के अनुचित व्यवहार थे अर्थात आने वाले मेहमान अपने दायित्व और कर्त्तव्यों का निर्वाह न करने के कारण आप अलैहिस्सलाम के दुःख और अप्रसन्नता का कारण बने थे। आपने अपनी अप्रसन्नता इस लिए नहीं प्रकट की थी कि जलसे में शामिल होने वालों से आपको सीधे कोई कठिनाई हुई थी बल्कि अपने यह प्रकट किया कि तुम लोग जो जलसे में शामिल हुए हो, एक दूसरे के हक़ अदा नहीं कर रहे बल्कि स्वार्थ और स्वाभिमान का भी प्रदर्शन कर रहे हो, अपने आराम को दूसरों के आराम पर प्रधानता दे रहे हो। जलसे पर आकर इस प्रकार व्यवहार कर रहे हो कि मानो यह कोई सांसारिक मेला है जबकि जलसे पर आने का उद्देश्य तो तक़्वा में तरक़्क़ी

करना, ख़ुदा तआला से अपने सम्बंध में बढ़ना तथा एक दूसरे के हक़ अदा करना और एक दूसरे के लिए अपनी क़ुर्बानी की भावना तथा अपने स्तर को बढ़ाना है और जब आपने देखा कि इस स्तर पर कुछ लोग पुरा नहीं उतर रहे तो आपको बड़ा खेद हुआ जिसकी अभिव्यक्ति आपने खुलकर फ़रमाई। अतः जलसे में शामिल होने वाले मेहमान जब जलसे में सम्मिलित होने के लिए आते हैं तो वे केवल मेहमान नहीं होते कि एक अतिथि के रूप में अपने लिए सुन्दर व्यवहार और आराम और सुविधा की आशा करें बल्कि बलिदान और विनम्रता के उच्च स्तर भी वे प्राप्त करने वाले होने चाहिएँ और जलसे के आयोजन का जो उद्देश्य है, वह हर समय उनके सम्मुख रहना चाहिए। जो, जैसा कि मैंने कहा अल्लाह से सम्बंध और रूहानियत में उन्नति है तथा एक दूसरे का हक़ अदा करना है। जहाँ तक ग़ैर अज़जमाअत मेहमानों का विषय है तो निःसन्देह हमने उनका ध्यान रखना है तथा उनके आतिथ्य में अपने सामर्थ्य के अनुसार जितनी सुविधाएँ उपलब्ध कराई जा सकती हैं तथा मेहमान नवाज़ी का हक़ अदा हो सकता है, अदा करना है तथा विशेष रूप से कुछ क़ौमों के सरदार जो हैं, वे भी मेहमान बनकर आए हैं उनका आतिथ्य विशेष रूप से करना चाहिए क्यूँकि यह आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का निर्देश भी है कि क़ौमों के लीडर और सरदार जो तुम्हारे पास आएँ तो उनका सम्मान करो, सतकार करो तथा उनको खिलाओ और पिलाओ।

इसी प्रकार हक़ की खोज में अनेक लोग आते हैं वे कोई भी हों उनका आतिथ्य हमें पूरी तरह करना चाहिए यही हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बात समझाई है। अतः आप अपने लंगर के कार्यकर्ताओं को यही निर्देश देते थे कि तुम किसी को जानते हो अथवा नहीं जानते, कोई बड़ा है या छोटा, अमीर है अथवा निर्धन है तुमने प्रत्येक की मेहमान नवाज़ी करनी है किन्तु एक अहमदी जब जलसे में शामिल हाने के लिए आता है तो उसे अपने आपको मेहमान और मेज़बान, दोनों समझना चाहिए तभी बलिदान और कुर्बानी की भावना बढ़ेगी तथा जलसे का वातावरण शांति पूर्ण और प्यार मुहब्बत का वातावरण बनेगा। अतिथि को सदैव यह प्रयास करना चाहिए कि उसने घर वालों के लिए तंगी का सामान नहीं करना बल्कि सुविधा के सामान करने हैं यही आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आदेश है। जलसे के दिनों में यहाँ इस स्थान पर क्यूँकि अस्थाई प्रबन्ध होता है इस लिए यहाँ आने वालों को वह आराम और सुविधा नहीं दी जा सकती जो एक स्थाई व्यवस्था पर की जा सकती है। मेहमानों को चाहिए कि कार्यकर्ताओं के साथ आवश्यकतानुसार प्यार और विनम्रता पूर्वक बात करके अपनी आवश्यकता को बताएँ और यदि वह अर्थात कार्यकर्ता मजबूरी के कारण आवश्यकता पूरी न कर पाएँ तो फिर प्रसन्नचित मन के साथ उनकी विवशता को स्वीकार करें।

प्रत्येक आने वाला अहमदी मेहमान अपने आपको केवल मेहमान न समझे, जैसा कि मैंने कहा बल्कि इस नीयत से जलसे में शामिल हो कि मेरा मूल उद्देश्य इस जलसे में शामिल होकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं का वारिस बनना है। जलसे की बरकतों से लाभान्वित होना है तथा अपनी आध्यात्मिकता में प्रगति करना है, न कि छोटी छोटी सांसारिक सुविधाओं के पीछे अपना समय नष्ट करना तथा वातावरण को इस कारण से बिगाड़ना और ख़राब करना है। किन्तु कार्यकर्ताओं को भी मैं दोबारा यही कहूँगा कि जो भी स्थिति हो, जैसा भी किसी का व्यवहार हो आप लोगों ने शिष्टाचार एवं धैर्य एवं साहस का प्रदर्शन करना है। मेहमानों को खाने के लिए जो भी मिले इन तीन दिनों में उसे हंसी ख़ुशी खा लेना चाहिए। देखें यह कितनी महान भावना है कि कुछ लोग जो कई विभागों में अफ़सर हैं केवल इस लिए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की सेवा में बरकत है, छुट्टियाँ लेकर एक शौक़ और रूचि से खाना बनाने की सेवा भी करते हैं इस लिए यदि खाने के स्वाद में न्यूनाधिकता भी हो

जाए तो शिकायत की आवश्यकता नहीं, परन्तु कार्यकर्ता भी याद रखें, जो खाना खिलाने वाले हैं, जो खाना पहुंचाने वाले हैं कि जब किसी को खाना दें तो सादर परोसें और यदि कोई दस बार भी सालन की माँग करे तथा अपनी इच्छानुसार सालन डलवाना चाहे तो डाल दें। कई बार खाना खिलाने के स्थानों पर छोटी छोटी बातों पर मनमुटाव हो जाता है इससे बचने का प्रयास करना चाहिए।

सैक्योरिटी की समस्याएँ प्रति वर्ष बढ़ रही हैं इस लिए सैक्योरिटी चैकिंग पर भी भर पूर सहयोग करें। अपना एम कार्ड, और जहाँ यह नहीं है अथवा परिचय पत्र की आवश्यकता है अथवा परिचय पत्र को दिखाने की आवश्यकता है वह अवश्य दिखाएँ तथा जितनी बार माँगा जाए दिखाएँ। अपना कार्ड तथा विशेष क्षेत्रों का पास किसी और को न दें अथवा किसी भी स्थान पर जाने की यदि ---------- तो कार्ड किसी दूसरे को न दें, सावधानी बरतनी चाहिए। चैकिंग करने वाले भी यदि किसी को दो कार्ड जारी हुए हैं एम्ज़ के अतिरिक्त तो दोनों चैक किया करें और देखें कि एक ही नाम के ये दोनों होने चाहिएँ।

इसी प्रकार इस वर्ष सैक्योरिटी वाले इस बात को भी चैक करें तथा रोकें उन लोगों को जो अपने साथ पानी की बोतलें लाते हैं, मेहमान इस चैकिंग में भी सहयोग करें क्यूँकि सरकारी संस्थानों की ओर से हमें इस ओर भी ध्यान दिलाया गया है तथा यह सब सुरक्षा व्यवस्था है इस लिए सबको सहयोग करना चाहिए। सैक्योरिटी चैक करने वाले कार्यकर्ताओं का भी काम है कि चाहे कोई जानने वाला है अथवा न जानने वाला है, कार्यकर्ता है अथवा साधारण व्यक्ति है, ओहदेदार है अथवा सामान्य व्यक्ति है, प्रत्येक को चैक करें। इस लिए किसी को बुरा मानने की आवश्यकता नहीं है इस विषय में और न ही चैकिंग करने वालों को शर्माने की आवश्यकता है।

इसी प्रकार यह भी अनिवार्य है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने दाएँ बाएँ वातावरण पर नज़र रखे, यह अत्यंत आवश्यक है और सबसे बढ़कर जैसा कि मैंने पहले भी कहा था कि इन दिनों में दुआओं पर बहुत ज़ोर दें। अल्लाह तआला प्रत्येक दृष्टि से जलसे को बरकत वाला बनाए। जलसे की कार्यवाहियों को सुनें और इधर उधर न फिरें। एक चीज़ प्रबन्धकों तथा कार्यकर्ताओं को यह भी कहना चाहता हूँ और पहले भी कई बार कह चुका हूँ कि प्रबन्धक लोगों की सुविधा के लिए अधिकाधिक प्रयास करें। कई बार कुछ लोग जो कुछ खा पीकर नहीं आते, घरों से जलदी आ जाते हैं अथवा आदत नहीं होती सवेरे खाने की और फिर यहाँ आकर कई बार खाने में देर भी हो जाती है। लम्बे अंतराल के कारण उनका स्वास्थ बिगड़ना शुरु हो जाता है। कुछ रोगी ऐसे होते हैं जो लम्बे समय तक ख़ाली पेट नहीं रह सकते तो यदि कोई ऐसा व्यक्ति हो तो खाना खाने की मार्की में किसी न किसी खाने की सामग्री की व्यवस्था होनी चाहिए तथा लोग वहाँ ड्यूटी पर उपस्थित होने चाहिएँ। परन्तु मेहमान भी यदि इस प्रकार की स्थिति हो तो तुरन्त खाकर वापस आएँ तथा जलसे की कार्य वाही को सुनें।

इस प्रकार प्रबन्धक इस बात को भी सुनिश्चित करें कि बाज़ार पूर्णतः बन्द हों। किसी स्टाल अथवा दुकान में स्टाल वाला अथवा दुकान वाला भी उपस्थित न हो, सब जलसा सुनें और पहली बात तो यही है कि सैक्योरिटी की व्यवस्था वहाँ होने चाहिए तथा ज़िम्मेदारी होनी चाहिए सैक्योरिटी व्यवस्था की बाज़ार के विभाग द्वारा परन्तु यदि फिर भी कुछ लोगों की संतुष्टि नहीं है, मूल्यवान सामग्री है तो दुकान पर नहीं बैठना वहाँ, एक स्थान निश्चित कर लें जहाँ एक कोने में बाज़ार में जलसा सुनने की व्यवस्था हो और टी वी लगा हो।

इसी प्रकार यह बात भी कहना चाहता हूँ कि जमाअती रूप में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी प्रदर्शनियाँ लगाई गईं हैं जिनमें रिव्यू ऑफ़ रिलीजन्ज़ की प्रदर्शनी भी होगी तथा साथ ही मसीह के कफ़न की प्रदर्शनी भी होगी। इस

विषय के कुछ विद्वान बाहर से भी आ रहे हैं जो अपने लैक्चर भी देंगे तथा प्रश्नोत्तर भी करेंगे। उनसे भी जिन लोगों की रूचि है उनको लाभान्वित होना चाहिए।

इसी प्रकार अल-क़लम का प्रोजैक्ट भी इस बार रिव्यू ऑफ़ रिलीजन्ज़ के अंतर्गत चलेगा जहाँ क़ुर्आन-ए-करीम की कोई न कोई आयत हाथ से लिखने का अवसर दिया जाता है। इसमें लोग बड़े चाव से सम्मिलित होते हैं तो जिनको भी रूचि है वे इसमें भाग ले सकते हैं। इसी प्रकार प्रत्येक विभाग आर्काईव्ज़ के अंतर्गत भी अबकी बार कुछ पवित्र वस्तुओं की प्रदर्शनी का प्रबन्ध किया गया है, वह भी देखने वाली चीज़ होगी। आलिम लोग अल्लाह तआला की कृपा से बड़े परिश्रम से अपने सम्बोधन तय्यार करते हैं, उनसे पूरा लाभ उठाना चाहिए केवल यही नहीं कि अपनी पसन्द के भाषण कर्ताओं अथवा निबन्धों को ध्यान पूर्वक सुनें, मैं अपनी जमाअत तथा स्वयं अपनी ज़ात तथा अपनी आत्मा के लिए यही चाहता हूँ तथा पसन्द करता हूँ कि ज़ाहिरी क़ील व क़ाल (भाषण में जोश की अभिव्यक्ति का प्रदर्शन) जो लैक्चरों में होती है उसको न केवल यह कि पसन्द किया जावे तथा सारा उद्देश्य और लक्ष्य यही हो जाए कि बोलने वाला कैसी जादू भरी तक़रीर कर रहा है, शब्दों में कितना ज़ोर है। मैं इस बात पर प्रसन्न नहीं होता। फ़रमाते हैं- मैं तो यही पसन्द करता हूँ कि न बनावट और अभिव्यक्ति से बल्कि मेरी प्रकृति और पसन्द की यही आवश्यकता है कि जो काम हो अल्लाह के लिए हो। फ़रमाया कि जो बात हो ख़ुदा के लिए हो। फिर आप फ़रमाते हैं- हम जो कुछ कहें ख़ुदा के लिए कहें, उसकी प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए तथा जो कुछ सुनें ख़ुदा की बातें समझकर सुनें तथा अमल करने के लिए सुनें तथा उपदेश की मज्लिस से हम केवल इतना ही अंश न ले जाएँ कि यह कहें कि आज बड़ा अच्छा उपदेश सुनने को मिला। सुनें, ध्यान पूर्वक सुनें तथा इस नीयत से सुनें की इसके अनुसार कर्म करना है। केवल इस नीयत से न सुनें कि उपदेश की प्रशंसा करनी है। फिर आप फ़रमाते हैं- मुसलमानों में पतन और गिरावट आने का यह एक बड़ा कारण है कि वे इस नीयत से नहीं सुनते। फ़रमाया- अन्यथा इतनी कान्फ्रंसें तथा अंजुमनें और मज्लिसें होती हैं तथा वहाँ बड़े बड़े लिस्सान (वाकपटु-धुंवादार भाषण करने वाले) तथा लैक्चरर अपने लैक्चर पढ़ते हैं और तक़रीरें करते हैं तथा कवियों की क़ौम की स्थिति पर नोहा ख़्वानियाँ (मरने वाले के लिए विलाप) करते हैं, यह बात क्या है कि इसका कुछ भी प्रभाव नहीं होता। फ़रमाया कि क़ौम दिन प्रतिदिन प्रगति के बजाए पतन की ओर जाती है। यही हम देखते चले आ रहे हैं तथा आजकल तो और भी अधिक भयानक हालात होते चले जा रहे हैं। फ़रमाया कि बात यही है कि इन मज्लिसों में आने जाने वाले निष्ठा लेकर नहीं जाते।

अतः इस मूल उद्देश्य को प्रत्येक शामिल होने वाले को समझना चाहिए कि निष्ठा पूर्वक इस जलसे में शामिल हों, सम्बोधनों को सुनें तथा इस धारणा के साथ सुनें कि हमने इनके अनुसार कार्य करने का यथासम्भव प्रयास करना है। अहमदी आलिमों पर अल्लाह तआला का यह बड़ा फ़ज़्ल है कि वे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इल्म-ए-कलाम (सुलभ एवं समृद्ध भाषा ज्ञान) से लाभान्वित होते हैं। अल्लाह और उसके रसूल की बातें उस ज्ञान द्वारा लाभ प्राप्त करके हम तक पहुंचाते हैं, आध्यात्मिक एवं ज्ञान वर्धक विषय बयान करते हैं। यदि हम वास्तव में इससे लाभान्वित होने वाले हों तो अपने जीवन में एक क्रांति पैदा कर सकते हैं।

अल्लाह तआला जलसे में शामिल होने वाले समस्त लोगों को जलसे के उद्देश्य पूरा करने का सामर्थ्य प्रदान करे।

TOLL FREE NO: 180030102131